सितम्बर - अक्टूबर 2012 वर्ष - 3, अंक - 14

जीवन का मार्ग

''धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना है...वे उन मजनुओं की नाई बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं।''

(यिर्मयाह 17:7; यशायाह 44:4)।

विषय वस्तु

संपादकीय ---------- 1

वचन की व्याख्या और आत्मा ---------- 2

परमेश्वर के वचन का अध्ययन क्यों आवश्यक है? (भाग 3) 8

बाइबल में की माताएँ - 5 ---------- 12

नया जन्म ---------- 14

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 14 ---------- 19

शब्द पहेली ---------- 20

मूसा और 12 भेदिए ---------- भीतरी आवरण पृष्ठ

मसीही विश्वासियों की आत्मिक उन्नति
एवं वचन में बढ़ती के उद्देश्य से
प्रकाशित एवं प्रसारित
अर्न्तसामुदायिक द्विमासिक पत्रिका।

पत्र व्यवहार के लिये पता :
जीवन का मार्ग,
पोस्ट बॉक्स् नं. - 27,
बिलासपुर - 495 001, छ.ग.

रचनायें आमन्त्रित हैं!

मसीही जीवन में उन्नति देने योग्य कहानियाँ, लेख, कवितायें आदि सादर आमन्त्रित हैं। परमेश्वर ने यदि आपको लेखनी के क्षेत्र में वरदान दिया है तो उसका उपयोग करें और अपनी रचनायें स्पष्ट अक्षरों में लिख कर भेजें। प्रकाशन योग्य रचनायें आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएँगी।

संपादकीय

असम की जातीय हिंसा के क्या मायने हैं? यूं तो इसके कई कारण गिने जा सकते हैं...कुछ राजनीतिक तो कुछ सामाजिक। परन्तु इन सबके बावजूद दुनिया भर में तेजी से बढ़ रही धार्मिक असहिष्णुता को भी हम अनदेखा नहीं कर सकते हैं। पृथ्वी पर साढ़े तीन वर्ष की अपनी सेवा के दौरान यीशु ने लोगों को प्रेम का पाठ पढ़ाया था। यह वह प्रेम था जो हमें अपने सह मनुष्यों से करना चाहिये। यीशु ने चेतावनी देते हुए कहा, "अंत के समय में मनुष्यों में प्रेम नहीं रह जायेगा।"

आज मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता प्रेम है। प्रेरित पौलुस प्रेम को सारी समस्याओं का हल निरूपित करता है। कुरिन्थियों की पहली पत्री में प्रेरित पौलुस ईश्वरीय प्रेम की आवश्यकता और महत्ता पर बल देता है। परमेश्वर का प्रेम ही आज हमारी वास्तविक आवश्यकता है। प्रेम हर बुराई को ढांपता है।

प्रेम की सच्ची अभिव्यक्ति हम कलवरी के क्रूस पर देखते हैं जब अपने मुँह पर थूकने वालों को यीशु आशीष देता है। आज मानव सभ्यता को भी इसी सहनशील प्रेम की आवश्यकता है। परमेश्वर का निष्कपट प्रेम हमारे सह-देशवासियों के मनों में उंडेला जाय...यही मेरी प्रार्थना है।

प्रभु की सेवा में

ए जे अब्राहम

संपादक

वचन की व्याख्या और पवित्र आत्मा

साजु जे. मैथ्यू

बाइबल का अधिकांश भाग सरल और साधारण लोगों के लिये पठनीय है। कई बार उसे समझने के लिये जो अतिरिक्त सहायता हमें चाहिए वह बाईबल की पृष्ठभूमि - पुस्तक का लेखक किस समय का प्रतितिधि है? किस संदर्भ में प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है - का ज्ञान भर होता है! हो सकता है कि हमें उपयोग में लाए गए शब्दों के तत्कालीन अर्थ की ओर यात्रा भी करना पड़े। ये सारी बातें एक सामान्य बुद्धिवाला व्यक्ति पूछकर और पढ़ कर समझ सकता है। 'वचनों में छुपे हुए आत्मिक सत्य' कहकर कई अतार्किक और बड़ी बड़ी बातें बोलना व्याख्या करने का सही तरीका नहीं है।

उपरोक्त बातों से यह नहीं समझना चाहिए कि वचन की व्याख्या करने की आवश्यकता ही नहीं है। निश्चय ही वचन की व्याख्या आवश्यक है। वचन की व्याख्या में निहित 'गलत और सही' बताने के लिये एक और किताब लिखने की आवश्यकता पड़ेगी। किन्तु इस अध्याय में यह बताया जा रहा है कि वचन की व्याख्या किस प्रकार हमारे आत्मिक जीवन को प्रभावित करती है।

वचन का वास्तविक व्याख्याता पवित्र आत्मा ही है। कोई भी व्याख्या तब तक सही नहीं हो सकती जब तक आत्मा गवाही न दे। "मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:12,13)।

किसी व्यक्ति के समझ में न आनेवाली बातों को समझाना व्याख्या कहलाता है। इस अर्थ में यहाँ पर यीशु के वचन का व्याख्याता स्वयं पवित्र आत्मा है। प्रत्यक्षतः चाहे कोई भी व्यक्ति वचन की व्याख्या करे किन्तु यदि पवित्र आत्मा हमारे हृदय में इस बात की गवाही न दे तो उस व्याख्या का फल शून्य होगा।

यीशु यहाँ पवित्रात्मा के कार्य के रूप में दो मुख्य बातों का वर्णन करता है। पहला, वह कायल करता है। (यूहन्ना 16:8)। पवित्र आत्मा, पाप, न्याय और धार्मिकता इन तीनों

क्षेत्रों में कायल करता है। वचन की सही व्याख्या में कायल होने की एक दशा आती है। किन्तु वह व्याख्याता के किसी कार्य का परिणाम नहीं होता है। प्रत्यक्षत: भले ही व्याख्या करने वाले हम हों, परन्तु हमारी व्याख्या पर पवित्र आत्मा जो गवाही देता है, उसके कारण कायल होने की दशा आती है। आश्चर्यजनक विद्धता से यदि कोई व्यक्ति व्याख्या कर भी ले किन्तु पवित्र आत्मा हृदय में जो गवाही देता है, उसके द्वारा यदि सुनने वाले कायल होने की दशा में नहीं पहुँच पाते - सुननेवाले यदि पाप, न्याय और न्याय के विषय में कायल नहीं किये जाते - तो ऐसी व्याख्या से सतर्क रहने की आवश्यकता है।

यहाँ पर 'कायल' शब्द का अर्थ व्यवहारिक अर्थ से थोड़ा भिन्न है। साधारण भाषा में हम कायल उसे कहते हैं जब कोई व्यक्ति अपने तर्क द्वारा किसी को अपने विचारों को मानने के लिये वाध्य कर देता है। किन्तु आत्मा द्वारा कायल किया जाना इससे भिन्न होता है।

सरकारी नौकरी से छुट्टी लेकर पाँच वर्ष विदेश में नौकरी करने के बाद लौटने पर मुकेश के पास बीस लाख रूपये जमा पूंजी के रूप में थे। उसने गंभीरता के साथ सोचा कि उस धन का क्या किया जाए। उसके सामने तीन संभावनाएँ थीं।

1. शेयर बाजार में पूरे चार लाख लगाकर उसे जल्दी से बढ़ा दिया जाए।
2. बीस लाख के साथ कुछ और धन कर्ज लेकर कुछ जमीन या घर खरीदा जाए और रियल एस्टेट के धन्धे में लगकर और धन कमाया जाए।
3. बीस लाख रूपये बैंक में जमा कर दिया जाए। तीन साल बाद भविष्य निधि से कुछ और धन लेकर एक छोटा सा घर बनाया जाए।

मुकेश ने हर एक संभावना पर विचार किया। शेयर बाजार में लाभ हो सकता है, किन्तु नुकसान होने की संभावना अधिक रहती है। मुकेश ऐसे कोई लोगों को अच्छी तरह जानता था जो शेयर बाजार के धन्धे में अपना सब कुछ गंवा चुके थे। ऐसी स्थिति में उनकी तुलना में कम अनुभवी होकर वह कैसे इस व्यवसाय में कदम रख सकता है। अगर खोने लायक धन होता तो कोई बात नहीं थी। यदि हिसाब-किताब गड़बड़ा गया तो पांच साल की पूरी मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी। अन्ततः मुकेश इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उसके जैसे एक व्यक्ति को इतने कम मूलधन और अनुभव को लेकर शेयर बाजार में नहीं कूदना चाहिए।

मुकेश ने दूसरी संभावना के लाभ-हानि पर भी विचार किया। रियल-एस्टेट का धन्धा अब पहले जैसा आकर्षक नहीं रहा। जमीन और मकान खरीदने वाले कई लोग

अब उससे छुटकारा पाने का प्रयास कर रहे हैं। मुकेश को लगा कि ऐसी स्थिति मे कर्ज लेकर रियल-एस्टेट के धन्धे में कूद पड़ना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी।

अन्ततः उसने तीसरी संभावना को आजमाने का निर्णय लिया। धन बैंक में ही रहने दो। तीन साल में बीस लाख्र रूपया, कुछ नहीं तो पच्चीस लाख्र तो हो ही जाएगा। कुछ पैसा पी.एफ. से भी निकल आएगा। कुल मिलाकर एक छोटा सा घर बनाया ही जा सकता है। अभी जितना रूपया मकान का किराया दे रहे हैं उससे पी.एफ. का रूपया वापस किया जा सकता है। मुकेश इस निर्णय पर पहुँचा कि कुछ भी हो ऐसा करना ही ठीक रहेगा।

तर्क हमारी बुद्धि को स्पर्श करता है। तर्क के आधार पर मन का विश्लेषण करने पर हम एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। कई बार इसी निष्कर्ष को हम कायल होना कहते हैं।

निष्कर्ष में (conclusion) और कायल (conviction) होने में क्या अन्तर है?

हम ने देख्रा कि निष्कर्ष तर्क का परिणाम है। अधिक सटीक तर्क (reasoning) से हम निष्कर्ष को उलट-पुलट कर सकते हैं। जमीन का धन्धा करनेवाला एक व्यक्ति यदि कहे कि भले ही अभी जमीन के दाम गिर गए हों, परन्तु सरकार जो नया भू-अधिनियम लाने जा रही है उसके कारण बहुत जल्द ही जमीन के भाव आसमान छूने लगेंगे, तो बहुत संभव है कि मुकेश धन को बैंक में जमा करने की अपनी योजना त्याग कर नये तर्क के आधार पर रियल-एस्टेट के धन्धे में कूद पड़े। निष्कर्ष (conclusion) को बदला जा सकता है। किन्तु कायल (conviction) होने की स्थिति को बदला नहीं जा सकता है क्योंकि वह तर्क से भी परे होता है।

यदि हम केवल तर्क पर आश्रित रहते हैं तो नये-नये तर्क हमें दुविधा में डाल सकते हैं। हो सकता है हम सन्देह में पड़ जाएँ कि कौन सा तर्क सही है, कौन सा निष्कर्ष अधिक बेहत्तर है। हो सकता है दोनों में ही हम तर्क ढूंढ़ लें। अगर हमें यह भी सही वह भी सही वाली स्थिति से गुजरना पड़े तो भ्रमित होना तो स्वाभाविक है।

किन्तु पवित्रात्मा का कार्य तर्क के कार्य से भिन्न होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह तर्क के विरोध में होता है। युक्ति का निश्चय ही अपना स्थान है। परमेश्वर से प्रेम करने और परमेश्वर के कार्य को प्रगट करने के लिये तर्क के बैठक के रूप में मनुष्य का मन एक अनिवार्य घटक है। किन्तु पवित्रात्मा हमें जो निश्चयता देता है वह तर्क की सीमाओं से बन्धा हुआ नहीं होता है। वह तर्क से परे होता है। जब तर्क मन (बुद्धि) में कार्य करता है तो पवित्रात्मा हमारे आत्मा में कार्य करता है (इसकी व्याख्या हम आगे

करेंगे)।

वर्तमान में हमारी व्याख्याएँ कई बार कायल करने के बजाय दुविधा में डाल देने वाली होती हैं। पवित्रात्मा पर निर्भर हुये बिना स्वयं की बुद्धि के निरन्तर अभ्यास के द्वारा जब हम नए नए विचार निकालने का प्रयास करते हैं, तब कायल होने के बजाय हम भ्रम में पड़ जाते हैं। हो सकता है, नई व्याख्या में बुद्धि में तर्क के गढ़ का निर्माण करने की क्षमता हो किन्तु पवित्रात्मा के तर्क से परे आत्मा में प्रवेश करने से रोकने लायक बुद्धि सम्मत व्याख्याएँ अवरोध उत्पन्न करते हैं। केवल पवित्रात्मा ही हमारी आत्मा को छू सकता है। इसे जाने बिना कई बार हम तर्क का इस्तेमाल कर लोगों को कायल करने का प्रयास करते हैं। न केवल यह एक असफल प्रयास है परन्तु यह हमारे अहंकार का प्रगटीकरण भी होता है।

हममें इतनी नम्रता होनी चाहिये कि हम कह सकें कि पवित्रात्मा को अपना कार्य करने दो। कायल करना पवित्रात्मा का कार्य है, हमारा नहीं। उसे पवित्रात्मा को ही करना है। हम केवल इतना कर सकते हैं कि गवाह बन जाएँ। किन्तु कई बार विज्ञान के विद्वान अपनी विद्वता के आधार पर और तर्कों के द्वारा विरोधियों को घुटने टेकने पर मजबूर करने का प्रयास करते हैं। स्मरण कीजिए कि यह युद्ध नहीं है। हो सकता है कि विरोधी (यह शब्द ही कितना गलत है) हमारे ज्ञान के सामने अपने घुटने टेक दे; वा हो सकता है कि उनके तर्क - तर्कश के तीर - समाप्त हो जाएँ। किसी के मौन हो जाने से यह नहीं कहा सकता है कि वह कायल हो गया है। बहुत अधिक हुआ तो इतना कह सकते हैं कि हमने उन्हें दुविधा में डाल दिया है। पवित्रात्मा का कार्य - कायल करना - अभी भी शेष रहता है। हमारी व्याख्या पवित्रात्मा द्वारा कायल किये जाने का मंच तैयार करने के लिये ही होनी चाहिये। पवित्रात्मा, आत्मा की कायल अवस्था से हमें भर देगा।

पवित्रात्मा का दूसरा बड़ा कार्य सत्य की ओर ले चलना है। यहाँ पर प्रभु पवित्रात्मा को सत्य की आत्मा सम्बोधित करता है। पवित्रात्मा वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के सत्यों को मनुष्यों में और मनुष्यों को परमेश्वर के सत्य की ओर लाता है। वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।

यहाँ पर प्रभु किसी ऐसी प्रक्रिया के बारें में बात नहीं कर रहा है जो पाप के अन्धकार में रहनेवाली जनता को सुसमाचार के सत्य की ओर ले जाती है। निश्चय ही पवित्रात्मा लोगों को अन्धकार से अद्‌भुत प्रकाश की ओर लाएगा किन्तु यहाँ पर प्रभु शिष्यों को सत्य की लाने की विषय में बात कर रहा है। क्या उन्होंने सत्य को नहीं जाना है? निश्चय ही उन्होंने जाना है! किन्तु उनका ज्ञान बहुत सीमित है इसलिये व्याख्या की

आवश्यकता होती है। पवित्रात्मा यीशु के वचनों का ही उपयोग कर शिष्यों को नए नए सत्य की ओर ले जाएगा। यह प्रक्रिया आज भी जारी है।

व्याख्या का पहला लक्ष्य कायल करना है तो दूसरा लक्ष्य सत्य की ओर ले चलना है। वचन की व्याख्या हमें नए नए सत्य की ओर ले चलने वाली होनी चाहिए।

'मार्ग बताना' शब्द पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह एक प्रक्रिया है। कोई भी शिष्य सारे सत्य को एक ही दिन में नहीं समझ लेता है। सत्य यीशु के वचनों में है। इससे बढ़कर यीशु में सत्य है। पवित्रात्मा यीशु के सत्य की ओर - एक एक सत्य की ओर हमें ले चलता है। एक से दूसरे की ओर एक तीर्थयात्रा! यदि कहीं किसी एक स्थान पर हम भटक जाएँ तो नये सत्य की ओर हम नहीं जा पायेंगे।

पवित्रात्मा केवल मार्ग दिखाता है। वह धक्का देकर नहीं ले चलता है। आत्मा के आधीन होकर एक एक कदम आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। वरना किसी एक स्थान पर, सत्य के मार्ग के किसी एक कोने में हम अपनी बढ़ती को रोक कर कहीं मुरझाए खड़े रह जाएँगे।

हमने देखा कि वचन की व्याख्या पवित्रात्मा के साथ मिलकर की जानेवाली एक प्रक्रिया है। जब हम व्याख्या करते हैं तो आत्मा हमारे हृदय में गवाही देता है। पवित्रात्मा हमें आत्मा द्वारा कायल किये जाने की ओर और नये सत्य की ओर भी ले चलता है। आइये हम वचन के व्याख्या की एक बेहत्तर नमूने को देखें। और किसी की नहीं यीशु के ही वचन की व्याख्या का नमूना। यह हमें वचन की व्याख्या की कुछ आधारभूत गलतियों और कुछ अनिवार्यताओं को देखने में हमारी सहायता करेगा।

यीशु के क्रूसीकरण तीसरे दिन यीशु के अनुयायियों में से कुछ स्त्रियाँ कबर पर गई परन्तु उन्हें यीशु की देह नहीं मिली। किन्तु उन्हें कुछ स्वर्गदूतों का दर्शन मिला जो यीशु के जी उठने की बात कर रहे थे। यह बात उन्होंने प्रेरितों को बताई। किन्तु उन्होंने उसे कहानी समझा।

उसी दिन - जी उठने के दिन ही - यीशु के शिष्यों में से दो लोग यरूशलेम में से सात मील दूर इम्माऊस गाँव की ओर जा रहे थे। उनकी यात्रा का विवरण सुमाचारक लूका 24 वें अध्याय में वर्णन करता है। यात्रा के दौरान वे उस दिन की घटनाओं के विषय में चर्चा कर रहे थे। स्त्रियाँ जब अति भोर को गई तो वहाँ पर उन्हें यीशु की लोथ नहीं मिली। पतरस ने भी जा कर देखा परन्तु उसे कपड़ा ही मिला, प्रभु की देह उसे नहीं मिली। क्या हुआ होगा? वे आपस में वादविवाद करने लगे।

जब वे इस प्रकार बादविवाद करते और तर्क-वितर्क कर रहे थे तब यीशु एक यात्री के भेष में उनके साथ मिल गया। किन्तु उनकी आँखें इस प्रकार से बन्द कर दी गई थीं कि वे यीशु को पहचान नहीं सके।

उसने उनसे पूछा, "तुम लोग किस विषय पर बातचीत कर रहे हो?" मुरझाए चेहरे के साथ वे अपने सहयात्री की ओर देखने लगे। उसमें से एक कैफा नामक व्यक्ति ने कहा, "इस फसह के पर्व के दौरान पर्व मनाने के लिये कितने ही विदेशी यरूशलेम में आये, क्या उनमें से केवल तू ही ऐसा है जिसने उन घटनाओं के विषय में नहीं सुना जो यरूशलेम में पिछले दिनों हुई हैं? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है!"

"कौन सी घटना?" परदेशी ने पूछा।

"हम नासरत निवासी यीशु के बारे में बात कर रहे हैं। परमेश्वर के सामने और सब मनुष्यों के सामने वह अद्‌भुत कामों और वचनों से भरपूर एक शक्तिशाली भविष्यद्वक्ता था, पर क्या करें हमारे महा पुरोहितों और पुरनियों ने इस बात को स्वीकार करना नहीं चाहा। उन्होंने यीशु को मृत्यु दण्ड दे दिया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। हम यीशु के शिष्य थे। हमारी आशा भी यही थी कि यीशु इस्राएल का उद्धार करने के लिये परमेश्वर द्वारा भेजा गया मसीह है।"

अभी हम किसी और विषय पर बातचीत कर रहे हैं। यीशु का क्रूसीकरण हुये आज तीसरा दिन हैं। हममें में से कुछ स्त्रियाँ यीशु के मृत देह पर सुगन्ध द्रव्य का लेप लगाने के लिये आज सुबह कबर पर गईं थीं। कल तो सब्त का दिन था, इसलिये वे कल नहीं जा सकीं थी। किन्तु आज सुबह जब वे कबर पर पहुंची तो उन्होंने वहाँ पर एक अद्‌भुत नजारा देखा। कबर पर जो भारी पत्थर रखा हुआ था, वह हटा हुआ था। यीशु का शरीर कबर में दिखाई भी नहीं दिया। उन्होंने लौट कर हमें समाचार दिया। और तो और वे यह भी कह रहे थे कि कुछ स्वर्गदूतों ने उन्हे दर्शन दिया है और उन्होने कहा है कि यीशु जी उठा है। हम सब बहुत घबरा गये। क्या ऐसा हो सकता है? यह जानने के लिये हम में से कुछ लोग कबर पर भी गये। जैसा स्त्रियों ने कहा था वैसा ही हमने वहाँ पाया! यीशु का शरीर कब्र में नहीं था। हम इसी विषय पर बातचीत और तर्क वितर्क कर रहे हैं।

यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा (उन्होंने नहीं जाना कि वह यीशु है), "ओहो, तो ये बात है!! तुम इतने बुद्धिहीन कैसे हो गये? तुम्हारी समस्या यह है कि तुम लोग भविष्यद्वक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं करने वाले मन्दबुद्धि हो। क्या तुम लोग भविष्यद्वक्ताओं की बातें नहीं समझते? मसीह को सारे दुःखों को भोगने के बाद ही परमेश्वर द्वारा तैयार किये गये महिमा में प्रवेश करना है।"

क्रमशः...

परमेश्वर के वचन का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

(भाग-3)

एम. ए. सुनील (एम. टी. एच.), बिलासपुर

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना एक नम्र विश्वासी का स्वभाव है

प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना एक नम्र विश्वासी का स्वभाव है। वे कभी भी उसके महत्व को नीची दृष्टि से नहीं देखेंगे। परमेश्वर का वचन सीखना उनके जीवन का भाग होता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक इस सच्चाई का वर्णन बीरिया के विश्वासियों का उदाहरण देते हुए करता है, ''ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें योंही है, कि नहीं'' (प्रेरितों 17:11)। बीरिया के विश्वासियों के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना सप्ताह में एक दिन का नहीं परन्तु दैनिक कार्य था और वे मन लगाकर परमेश्वर की सच्चाइयों का अध्ययन करते थे।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना सामर्थ्य प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है

परमेश्वर का वचन वह श्रोत है जहाँ से सच्चे विश्वासी अपना सामर्थ्य पाते हैं। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना दिशा, आशा, शान्ति, और समझ प्रदान करता है। यह हमें प्रकाशित करता है और हमारे प्रतिदिन के जीवन में हमें आत्मिक सामर्थ्य प्रदान करता है। प्रेरित पौलुस बाइबल की सामर्थ्य का वर्णन करते हुए कहते हैं, ''समस्त पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। परमेश्वर के वचन का अध्ययन हमें अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा समझने में सहायता करता है। इसकी रचना संपूर्ण सृष्टि की भलाई के लिए परमेश्वर के मार्ग में चलने में हमारी सहायता करने के लिए की गई है।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना आत्मिक युद्ध जीतने के लिये अनिवार्य है

हमारे मन आत्मिक युद्ध के युद्धभूमि है। शैतान हमारे मन और सोचने की रीति पर आक्रमण करता है। यह वास्तविकता है कि जो कुछ हम सोचते हैं वही कार्यरूप में परिणत होता है। यदि विश्वास सच्चाई पर आधारित न हो तो परिणाम यह होता है कि हम युद्ध में हार जाते हैं। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना उन दृढ़ गढ़ों को नाश कर देता है जिसे शैतान ने हमारे मनों में बनाया है। जब गलत मान्यताएँ सही की जाती हैं तब रूपान्तरण होता है। यह सच्चाई परमेश्वर के वचन में इस प्रकार स्पष्ट रीति से बताई गई है, ''क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है।। सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावनाओं को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं'' (2 कुरिन्थियों 10:4–5)। परमेश्वर के वचन का अध्ययन हमारी सोच को नियन्त्रित करने में हमारी सहायता इस प्रकार करता है, ''निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जों बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो'' (फिलिप्पियों 4:8)। परमेश्वर के वचन को आत्मिक युद्ध में प्रयुक्त तलवार निरूपित किया गया है। ''परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको'' (इफिसियों 6:11)।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना हमें बुरे जीवन से बचाता है

परमेश्वर चाहता है कि हम एक धार्मिकता का जीवन जीएँ परन्तु पाप हमें बुरे जीवन की ओर ले चलता है। गलत मनोवृत्तियाँ और व्यवहार इस बुरे जीवन को इन्धन देता है। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना हमें इस प्रकार के बुरे जीवन से बचाता है। भजनकार ने इस प्रकार वर्णन किया है, ''मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ'' (भजन 119:11)। यह परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और जानने के महत्व को बताता है। बाइबल में परमेश्वर ने अनुग्रह पूर्वक और हमें वह सब कुछ जानने और सीखने के लिए बुलाता है जो उसने कहा है। यह अनन्त जीवन के विषय में प्रोत्साहन और अगुवाई प्रदान करता है और परमेश्वर की महिमा की एक झलक प्रस्तुत करता है।

15. परमेश्वर के वचन का अध्ययन रूपांतरण लाता है

परमेश्वर के वचन में रूपान्तरण की सामर्थ्य है। यह व्यक्ति, परिवार, समाज और देश में रूपान्तरण ला सकता है। इसमें हमें पाप से बचाने और परमेश्वर की बहुतायत की आशीषें प्राप्त करने में सहायता करने की सामर्थ्य है। यीशु मसीह की प्रार्थना में परमेश्वर के वचन की रूपान्तरण करने की सामर्थ्य प्रगट है, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। प्रेरित पतरस रूपान्तरण के विषय में इस प्रकार कहता है, ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो'' (1 पतरस 2:9)। प्रेरित पतरस आगे कहता है कि इस रूपान्तरण के लिए ''हमें नए जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करना चाहिए, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाएँ'' (1 पतरस 2:2)। हमें रूपान्तरण करने के लिए परमेश्वर ने अपना वचन दिया इसलिए हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन परिपक्वता पाने के लिये अनिवार्य है

नया जन्म के अनुभव के साथ मसीही जीवन प्रारंभ होता है। तब परिपक्वता के लिए बढ़ती एक अनिवार्य तथ्य होता है। इस परिपक्वता को पाने के लिए परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना अनिवार्य है। कुरिन्थ के विश्वासियों को प्रेरित पौलुस ने लिखा जिनके पास सब प्रकार के आत्मिक वरदान थे, ''हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से; परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध–पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उस को न खा सकते थे; बरन अब तक भी नहीं खा सकते हो। क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिए कि जब तुममें डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?'' (1 कुरिन्थियों 3:1–3)। वचन में पुनः परिपक्वता के लिए अध्ययन के महत्व को किस प्रकार बताया गया है। ''समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए। क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिए है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं'' (इब्रानियों 5:12–14)। यह दर्शाता है कि परमेश्वर के वचन के अध्ययन से

समझौता नहीं किया जा सकता है। सामाजिक सेवा या अन्य कार्यक्रम परमेश्वर के वचन का अध्ययन और सिखाने का विकल्प नहीं है। कलीसिया का सबसे अहम दायित्व लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाना और इस प्रकार उन्हें परिपक्वता की ओर ले चलना है।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना हमें दूसरों की सेवा करने के लिये सशक्त बनाता है

मानवजाति परमेश्वर की सबसे अदभुत सृष्टि है। हमारे जीवनों के द्वारा परमेश्वर के स्वभाव को प्रगट करने के लिए उसने हमारी रखना की है। हमारी सृष्टि का मूल उद्देश्य वास्तविक जीवन का अनुभव करने में दूसरों की सहायता करना है। कोई भी अपने लिए नहीं जी सकता है परन्तु दूसरों के लिए जीता है। परन्तु दूसरों की सेवा करने की हमारे योग्यता को पाप ने बहुत अधिक नष्ट कर दिया। पाप ने हमें स्वार्थी बना दिया और सेवा के अर्थ को व्यर्थ कर दिया है। परिणामस्वरूप हमारे समाज में सामाजिक बुराइयों की भरमार है। हर कोई लाभ कमाने और स्वयं के फायदे में लगा हुआ है। हजारों अशिक्षित बच्चे, अनाथ, और बुजुर्ग हमारे चारों ओर बिना उचित देखभाल और नेतृत्व के घूम रहे हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, कि ''परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको'' (इफिसियों 6:11)। इतिहास प्रमाणित करता है कि जिन लोगों ने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया वे सामाजिक बदलाव के खड़े हुए। परमेश्वर के वचन का अध्ययन सभी बाधाओं से परे प्रेम करने में हमारी सहायता करेगा।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना आशीष लाता है

बाइबल की प्रथम पुस्तक उत्पत्ति कहता है कि अब्राहम तब आशीषित हुआ जब उसने परमेश्वर के वचन को समझने और पालने करने के लिए समर्पित किया। बाइबल का अन्तिम पुस्तक भी इस तथ्य को इस प्रकार बताता है, कि ''धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इस में लिखी हुई बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट आया है'' (प्रकाशितवाक्य 1:3)। परमेश्वर उनका आदर करेगा जो उसके वचन का आदर करते हैं। यीशु ने कहा, कि जब हम उसे सीखते हैं तो वह हमारे प्राणों को विश्राम प्रदान करता है, ''मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है'' (मत्ती 11:29–30)।

बाइबल में की माताएँ - 5

बतशेबा- बतशेबा और राजा दाऊद के बीच संबन्ध का प्रारंभ सुखद नहीं था परंतु बाद में वह उसकी विश्वासपात्र पत्नी और राजा सुलैमान की माँ बनी जो इस्राएल का सबसे बुद्धिमान राजा था।

राजा दाऊद ने अपने साथ व्यभिचार करने के लिये बतशेबा को बाध्य किया जबकि उसका पति हित्ती उरियाह युद्ध में गया हुआ था। जब वह गर्भवती हुई तब दाऊद ने चालाकी से उरियाह का इसके लिये जिम्मेदार बनाना चाहा। असफल रहने पर उसने उसे मरवाने का षड़यन्त्र रचा। उसने उरियाह को युद्ध की प्रथम पंक्ति में नियुक्त किया और वह शत्रुओं की तलवार का शिकार हो गया। विलाप के दिन पूरे होने के पश्चात् दाऊद ने उसे अपनी पत्नी बना लिया। परन्तु दाऊद के इस कृत्य ने परमेश्वर को अप्रसन्न कर दिया और बतशेबा से उत्पन्न पुत्र बीमार पड़कर मर गया।

बतशेबा दूसरी बार गर्भवती हुई और उसने सुलैमान को जन्म दिया। परमेश्वर ने सुलैमान से बहुत प्रेम किया जिसके कारण नातान नबी ने उसे यदीद्याह नाम दिया, जिसका अर्थ है "यहोवा का प्रिय।"

बतशेबा के कार्य :

बतशेबा दाऊद की विश्वासयोग्य पत्नी थी।

वह विशेष रूप से अपने पुत्र सुलैमान के प्रति विश्वासयोग्य थी, जिसने यह सुनिश्चित किया था कि वह राजा के रूप में दाऊद्र का अनुकरण करे, यद्यपि वह दाऊद का प्रथम पुत्र नहीं था।

बतशेबा उन पांच स्त्रियों में से एक है जिन्हें यीशु की वंशावली में शामिल किया गया है।

बतशेबा की सामर्थ :

बतशेबा बुद्धिमती और सुरक्षात्मक थी। जब अदोनिय्याह ने सिंहासन पर कबजा करने की योजना बनाई तब उसने अपने पद का सदुपयोग कर अपनी और सुलैमान की सुरक्षा सुनिश्चित कराई।

जीवन पाठ :

प्राचीनकाल में स्त्रियों के पास कम अधिकार होते थे। जब राजा दाऊद ने बतशेबा को बुलवाया तब उसके पास उसके साथ सोने के अलावा कोई चुनाव नहीं था। जब दाऊद ने उसके पति को मरवा दिया, तब उसके पास दाऊद की पत्नी बनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। दुर्व्यवहार करने के बजाय उसने दाऊद से प्रेम करना सीखा और सुलैमान के लिए एक अच्छे भविष्य की कामना की। अक्सर जब परिस्थितियाँ हमारे विरुद्ध होती हैं, तब यदि हम परमेश्वर पर भरोसा रखे रहें, तो हम जीवन में वास्तविक अर्थ पा सकते हैं। परमेश्वर जीवन को नया आयाम देता है।

बतशेबा से संबन्धित बाइबल संदर्भ :

2 शमूएल 11:1-3, 12:24; 1 राजा 1:11-31, 2:13-19; 1 इतिहास 3:5; भजन 51:1।

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-12 का उत्तर

सभी प्रश्न 2 कुरिन्थियों की पत्री से लिए गए थे।

1. कि विश्वास में हो कि नहीं (13:5)
2. कि तुम्हें पवित्र कुँवारी की नाईं मसीह को सौंप दूँ (11:2)
3. थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम (8:15)
4. जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से (9:7)
5. कि उस पत्री से तुम्हें शोक तो हुआ परन्तु थोड़ी देर के लिए था (7:8)
6. मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है (2:14)
7. इसलिये कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से फूल न जाऊँ (12:7)
8. चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर उसे भाते रहें (5:9)
9. हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं (3:18)
10. गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं (10:4)

नया जन्म

यूहन्ना 3:1-8

- ए. जे.

नीकुदेमुस यहूदियों का सरदार था। अपने सामाजिक पद के कारण वह सामने आने से हिचकिचाता है। शायद वह अपने लोगों से वह भयभीत था।

नीकुदेमुस रात को यीशु के पास आता है और उससे कहता है, हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है। क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता है। लेकिन तीसरे पद में यीशु ने जो उत्तर दिया वह ध्यान देने योग्य है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, "..... यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

नीकुदेमुस उन आश्चर्यकर्मों के लिये यीशु की प्रशंसा करता है जो यीशु ने पिछले दिनों में दिखाए थे। किन्तु यीशु एक कदम आगे बढ़कर नीकुदेमुस से कहता है, कि आश्चर्यकर्मों को देखना ही उसके लिए काफी नहीं है। परमेश्वर के सभी कर्म मनुष्य को आश्चर्यकर्म लगेंगे। क्योंकि वे ऐसे कार्य होते हैं जो मनुष्य नहीं कर सकते हैं।

आम तौर पर मानवीय स्वभाव होता है कि कोई भी व्यक्ति जब आम आदमी से हटकर एक कार्य करता है, तो वह उसकी दृष्टि में बहुत महान ठहर जाता है। यहाँ पर यीशु मसीह उसकी प्रशंसा से तनिक भी विचलित नहीं होता है। यीशु कहता है, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

दूसरे शब्दों में यीशु नीकुदेमुस से कहता है, कि कुछ एक आश्चर्यकर्मों को देखना ही काफी नहीं है, बल्कि परमेश्वर के राज्य को देखना एक मनुष्य के लिये अनिवार्य है। तीसरे पद में और स्पष्ट रीति से यीशु मसीह कहता है, कि परमेश्वर

के राज्य में प्रवेश करने के लिये एक व्यक्ति के मे क्या योग्यताएँ होनी चाहिये?

यीशु कहता है, कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये एक व्यक्ति को नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। नीकुदेमुस इस बात को समझ नहीं पाता है। वह कहता है, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह माता की गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" यीशु उससे कहता है, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, तब तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है।"

नया जन्म को यीशु मसीह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कहता है। यीशु के शब्दो में, जब एक व्यक्ति शैतान के राज्य से निकल कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करता है, तब उसका नया जन्म होता है। अर्थात् उसके जीवन पर से शैतान की प्रभुता हट जाती है और परमेश्वर उसके जीवन का प्रभु बन जाता है... उसके जीवन का स्वामी बन जाता है।

हम जानते हैं, हमारे देश में पहले राजाओं का शासन था। एक राज्य में उसी राजा के नियम और कानून चलते थे और उस राज्य के नियम और कानून दूसरे राज्यों में प्रभावी नहीं होते थे। कहने का तात्पर्य है, यदि हमें किसी राजा के राज्य में रहना है तो उस राज्य के जो नियम कानून हैं उन्हें मानना होगा,... उनके अनुसार चलना होगा। इसी प्रकार जब हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं, तो परमेश्वर के नियम और कानून हमारे जीवन में प्रभावी हो जाते हैं।

जब हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं, तो अपने जीवन पर से शैतान के अधिकार का त्याग कर हम परमेश्वर के अधिकार को अपने जीवन पर ले लेते हैं। हम कहते हैं, हे परमेश्वर, आज से तू मेरा प्रभु है। आज से शैतान मेरे जीवन का प्रभु नहीं है। आज से परमेश्वर मेरे जीवन का प्रभु है।

यहाँ आश्चर्य की बात यह है, कि यहूदियों का सरदार होकर भी नीकुदेमुस इन बातों को समझ नहीं पाता है। यीशु मसीह जब उससे नया जन्म की बात करता है तो वह उसे सांसारिक रीति से या शारीरिक रीति से समझता है। वह कहता है, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है?

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन

पाए" (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर ने किसी एक व्यक्ति, एक समाज, या एक धर्म के लोगों से प्रेम नहीं किया बल्कि वचन कहता है, कि परमेश्वर ने सम्पूर्ण जगत से प्रेम किया। वह चाहे किसी भी जाति, किसी भी भाषा, किसी भी धर्म का हो; परमेश्वर का वचन इस विषय में बहुत स्पष्ट है, कि परमेश्वर का प्रेम सारे संसार के लिये है। परमेश्वर के प्रेम को हम सीमित नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर ने अपना प्रेम कैसे प्रगट किया? उसने अपना एकलौता पुत्र मानवजाति के उद्धार के लिये दे दिया।

मनुष्य को पाप से छुड़ाने के लिये एक निर्दोष बलिदान की आवश्यकता थी। एक ऐसा व्यक्ति ही मनुष्य के बदले में पाप का मूल्य चुका सकता था जो निष्पाप हो और इस संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो निष्पाप हो।

बाइबल कहती है, कि जितने स्त्रियों से जन्मे हैं, वे सब पाप के अधीन हैं... सब में पाप का स्वभाव पाया जाता है। फिर मनुष्य को पाप से छुड़ाने के लिये या मनुष्य के उद्धार का मूल्य चुकाने के लिये कौन मर सकता था? इस संसार में कोई भी इस योग्य नहीं था। इसलिये परमेश्वर स्वयं इस पृथ्वी पर उतरकर आता है। हाँ, हमारे प्रति उसके प्रेम ने उसे मानव देह धारण करने के लिए विवश करता है।

वचन स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का प्रेम जगत के प्रति कैसा अद्‌भुत है....कैसा गहरा उसका प्यार है, कि वह स्वयं मनुष्य का रूप धारण करके इस पृथ्वी पर उतर आता है। इस विषय में वचन कहता है, कि उसने अपने आपको शून्य कर दिया। अर्थात् अपने आपको सभी ईश्वरीय अधिकार से सीमित कर दिया।

आश्चर्य की बात यह है कि नीकुदेमुस इन बातों को समझ नहीं पाता है। उसमें बुद्धि की कमी नहीं थी,... वह यहूदियों का सरदार था। लेकिन इतनी सी बात को वह समझ नहीं पाता है। परमेश्वर के राज्य की बातें परमेश्वर की आत्मा ही हमें समझा सकता है। परमेश्वर का आत्मा ये बातें जब हम पर प्रगट करता है, तभी ये बातें हमें समझ में आती हैं, कि इसके भेद क्या हैं।

आठवाँ पद कहता है, "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती

है।"

नीकुदेमुस बहुत चकित होता है। शायद उसने कभी अपने जीवन में नये सिरे से जन्म लेना जैसा शब्द नहीं सुना था। इतना शिक्षित होने के पश्चात् भी,... यहूदियों का सरदार होने के बाद भी उसने कभी ऐसा शब्द नहीं सुना था। यीशु मसीह उससे कहता है, नये सिरे से जन्म लेना जैसा शब्द सुनकर उसे आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिये। क्योंकि नया जन्म का कार्य विशुद्ध रूप से परमेश्वर के आत्मा का कार्य है। परमेश्वर ही है जो किसी व्यक्ति को नया जन्म दे सकता है।

एक व्यक्ति जब आत्मा से जन्म लेता है तो उसके जीवन में एक अद्‌भुत कार्य होता है। अपने आपको वह शैतान के राज्य से बाहर परमेश्वर के राज्य में पाता है। हम जानते हैं, कि हवा बहुत प्रभावशाली होती है। जब यंत्रों का आविष्कार नहीं हुआ था तब बड़े-बड़े व्यापारिक जहाजों को हवा के सामर्थ्य से पानी पर चलाया जाता था। यीशु मसीह नया जन्म के कार्य को पवित्र आत्मा का कार्य कहता है और इसकी तुलना हवा की सामर्थ्य से करता है।

पिछले दिनों में जब हमारे देश में कई प्राकृतिक विपदायें आईं, सुनामी आई, बहुत सारी विपदाएँ आईं और हम सबने हवा के ताकत को देखा। यीशु मसीह इसी हवा की ताकत से तुलना कर उससे कहता है, परमेश्वर का सामर्थ्य इससे कहीं अधिक है। यदि हवा कुछ घण्टों बहकर सब कुछ को उलट-पुलट कर सकती है, तो आत्मा किसी व्यक्ति के जीवन को कितना अधिक उलट-पुलट कर सकता है। वह कहता है, "जो कोई आत्मा से जन्मा है, वह ऐसा ही है।"

प्रेरितों के काम 2:38 में एक बहुत बड़ी भीड़ पतरस से एक अहम सवाल करती है। जब पतरस ने उन यहूदियों को सुसमाचार सुनाया तो जो वहां पर इकट्ठे थे, उनके हृदय छिद गये और वे पूछने लगे, कि हे भाइयों अब हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ....।"

पतरस कहता है, अब वचन तुम्हारे पास पहुंच चुका है,.... वचन ने तुम्हारे जीवन में कार्य भी कर दिया है। अब तुम्हें अपने मन को फिराने की आवश्यकता है। अब अपने मन को, अपने जीवन को शैतान की ओर से, इस संसार की ओर से फिर कर परमेश्वर की ओर लाने की आवश्यकता है।

संदेश रूपरेखा

1. एक आदर्श एवं उत्तम पत्र-फिलेमोन (पद 7-10)

1. जो प्रेम तुम दूसरों को दर्शाते रहे हो उसको अब भी दर्शाओ। (पद 7-8)
2. मेरे आदेश पर नहीं वरन नम्रता पर ध्यान दो। (पद 8)
3. जो तुम्हें करना है वह प्रेम से प्रेरित होकर करो। (पद 9)
4. यह उपकार एक वृद्ध व्यक्ति के साथ कर रहे हो। (पद 9)
5. इसके द्वारा तुम एक बन्दीगृह में रहनेवाले के साथ भलाई करोगे। (पद 9)
6. मेरा आग्रह एक उद्धार प्राप्त युवक के लिए है जो आत्मा में मेरा पुत्र है। (पद 10)
7. यह भलाई का काम उस व्यक्ति के साथ कर रहे हो जिसे पौलुस ने अपने कष्ट में प्रभु के लिए जीता है। (पद 10)

2. शमूएल द्वारा विश्वास की प्रार्थना (1 शमूएल 7:1-14)

1. यह पश्चाताप, अंगीकार और फिरने की माँग करती है। (पद 3-6)
2. इसे शंका, भय का सामना करना पड़ता है। (पद 8)
3. स्पष्ट और सीधे-सीधे प्रभु से की जाती है। (पद 8)
4. इसका आधार बलिदान है। (पद 9)
5. इसे अन्धकार की शक्तियाँ चुनौती देती हैं। (पद 10)
6. इसका प्रत्युत्तर अवश्य आता है। (पद 10)
7. इससे परमेश्वर को महिमा मिलती है। (पद 11,12; भजन 126:3)

(रेव्ह. जॉर्ज लूकस, ललितपुर, उत्तरप्रदेश के संदेशों के संकलन **"मैं क्या प्रचार करूँ?" भाग-1** से साभार। यह पुस्तक प्राप्त करने के लिए फोन करें- फोन नं. 05176-272399)

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-14

नोट : सभी प्रश्न यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 11-21 में से लिये गये हैं।

1. जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया, वे कैसे हैं?
2. पतरस यीशु मसीह की कौन सी बात से उदास हुआ?
3. पिलातुस ने जो दोष पत्र लिखकर क्रूस पर लगाया, उसमें क्या लिखा था?
4. यीशु मसीह जगत से किस प्रकार बातें की और कहाँ उपदेश दिया?
5. कौन आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा?
6. यीशु मसीह कैसे अपने पिता के प्रेम में बना रहता था?
7. शमौन पतरस ने तलवार चलाकर जिसका कान उड़ा दिया वह कौन और उसका नाम क्या था?
8. कौन ठोकर नहीं खाता है और क्यों?
9. यीशु ने किसके पाँव धोए?
10. यीशु ने किसे मरे हुओं में से जिलाया था?

नियम और शर्तें :

- पहेलियों के हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि अक्टूबर 31 है।
- धर्मशास्त्र से मेल खानेवाले उत्तर ही मान्य होंगे। उत्तरों के साथ बाइबल संदर्भ देना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्नों के सही हल भेजने वाले ही विजेता घोषित किये जाएंगे।
- कृपया अपना नाम और पता साफ-साफ अक्षरों में लिखें।
- सभी हल पोस्टकार्ड पर लिख कर पत्रिका के पते पर भेजें।

(बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-12 की विजेजा: कुमारी ममता सोनवानी, नगपुरा, बिलासपुर)

शब्द पहेली

इस शब्द पहेली में बाइबल में वर्णित दस बेटियों के नाम दिए गए हैं। उत्तर प्राप्त करने

ता	उं	से	ल	प	स	ज	ल
न	मा	ब	रि	ते	जं	क	ज
क	जी	र	स्पा	गू	मी	बा	ह
म	स्ते	ने	च	ल	प	स	प
ए	म	अ	ही	नो	अ	म	द
ब	द	ह	जू	व	जं	त	ब
ब	त	क	व	ह	म	क	द
क	प	शे	ह	श	व	त	झा
जै	ज	रा	बा	र	दा	म	ऊ
न	तू	प	हे	म	रु	ज	अं
अ	पं	म	ह	ल	त	नू	ज

के लिये 1 शमूएल 14:50, 1 राजा 4:15, एस्तेर 9:29, उत्पत्ति 26:34, उत्पत्ति 28:9, 2 शमूएल 6:23, 2 शमूएल 11:3, 2 शमूएल 14:27, 2 शमूएल 2:10, और उत्पत्ति 29:10 पढ़कर उन्हें बायें से दायें, ऊपर से नीचे और आड़ी दिशा में ढूंढ़िये।

मूसा और 12 भेदिये

1 इस्राएली 40 वर्षों तक जंगल में रहते और यात्रा करते रहे। एक दिन परमेश्वर ने उनसे कहा कि प्रत्येक कुल से एक व्यक्ति को भेदिया बनाकर कनान भेजो। मूसा ने ऐसा ही किया।

2 40 दिनों के बाद जब वे लौटे, तो उनके पास उस देश के फल थे। उन्होंने बताया कि उस देश में दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।

3 परन्तु 10 भेदियों ने यह भी बताया कि उस देश के लोग बहुत ऊँचे डीलडौल के हैं और उनके शहर ऊँचे दीवारों से घिरे हुए हैं। उन्होंने कहा, कि हम उनके विरुद्ध युद्ध करके जीत नहीं सकते हैं।

4 किन्तु कालेब और यहोशू ने कहा, निश्चय ही वह देश अद्‌भुत है...परमेश्वर ने हमें उस देश को देने की प्रतिज्ञा किया है, और हमें उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा करना चाहिए।

5 तब लोग डर गए और क्रोधित होकर यहोशू और कालेब को पत्थरवाह करने लगे।

6 परमेश्वर ने कहा, ये लोग कब तक मेरा इन्कार करते रहेंगे...इतने सारे चिन्हों को देखने के पश्चात् भी वे मुझ पर भरोसा नहीं करते? मैं उन्हें दण्ड दूँगा। परन्तु मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि वह उन्हें क्षमा करे। परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। और कहा कि वे कनान में प्रवेश नहीं करने पाएँगे, परन्तु उनके बालबच्चे प्रवेश करेंगे।

7 इस प्रकार इस्राएली 40 वर्षों तक जंगल में यात्रा करते हुए धीरज और विश्वास का पाठ सीखते रहे। 40 वर्षों के पश्चात् मूसा ने अपने सामने प्रतिज्ञात देश को देखा, परन्तु मूसा उसमें प्रवेश नहीं कर सका और परमेश्वर ने उसे दूर से ही कनान को देखने की अनुमति दी।

बहुभाषी मसीही गीत पुस्तक उपलब्ध है।

√ 466 हिन्दी गीत एवं भजन

√ 131 हिन्दी कोरस

√ 68 क्षेत्रीय भाषायों के गीत

√ 401 अंग्रेजी गीत एवं भजन

अतिरिक्त विशेषताएँ :

♦ प्रभुभोज की सामान्य विधि

♦ विभिन्न अवसरों के लिए बाइबल संदर्भ

♦ प्रेरितों का विश्वास वचन

पुस्तक प्राप्त करने के लिए संपर्क सूत्र :

ए जे अब्राहम

मोबाइल नं. - 094255-49016

बिराट छतर

मोबाइल नं. - 098931-35623

BOOK POST / PRINTED MATTER

If undelivered, please return to,

Sanctuary Literature Service

Post Box No. - 27,

Bilaspur, Chhatisgarh-1.